ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 32 कुल पृष्ठ-8 5 से 11 अगस्त, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 श्रा.कृ.-12

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री के पवित्र संकल्पानुसार

पद्मिनी आर्य कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में 34वाँ वेद पारायण महायज्ञ भव्यता के साथ सम्पन्न

गुरुकुल प्रांगण में श्री दीनदयाल गुप्त के कर-कमलों से भव्य यज्ञशाला का हुआ शिलान्यास

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, वीतराग संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, आचार्य सोमदेव जी, श्री देवेन्द्र शेखावत जी, श्री विजय शर्मा जी आदि ने स्थापित किया ताम्रपत्र

आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष एवं पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का पुनरूद्धार कर संचालन कर रहे आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री के पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण संकल्प को मूर्त रूप देने हेतु उनके सुयोग्य सुपुत्र युवा विद्वान् श्री प्रणव शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती निकिता आर्या ने अपने पैतृक गाँव निनौरा, जिला-मन्दसौर, मध्य प्रदेश के बदले 34वाँ वेद पारायण महायज्ञ पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के प्रांगण में 23 से 25 जुलाई, 2021 को भव्यता के साथ आयोजित किया। यज्ञ में आचार्य सोमदेव शास्त्री, उनकी विदुषी धर्मपत्नी श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री, उनके कनिष्ठ पुत्र श्री अनिरूद्ध आर्य के अतिरिक्त निनौरा गाँव के सैकड़ों आर्यजनों ने भाग लिया। उनके अतिरिक्त खेड़ा निम्बाहेड़ा, छोटी साजड़ी, बड़ी साजड़ी, भीलवाड़ा, उदयपुर, जयपुर आदि स्थानों से भी उत्साही आर्यजन यज्ञ में पधारे। विदित हो कि आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने वेद पारायण यज्ञ की रजत जयन्ती कुछ वर्षों पूर्व अपने पैतृक गाँव में मनाई थी जिसमें 25 आर्य परिवारों को दैनिक यज्ञ करने का संकल्प दिलवाया गया था। आचार्य जी ने अपना पैतृक निवास आर्य समाज की गतिविधियों के लिए दान देकर उसमें शानदार सत्संग भवन का निर्माण कराया। जहाँ निरन्तर साप्ताहिक सत्संग एवं यज्ञ होता आ रहा है। प्रतिदिन छोटे बच्चों को संन्ध्या एवं व्यायाम सिखाने के लिए आर्य युवक परिषद् की इकाई भी गठित की गई है और बच्चों को वैदिक संस्कार भी दिये जाते हैं।

कोरोना संक्रमण के कारण इस बार आचार्य सोमदेव जी ने अपने परिवारजनों से विचार-विमर्श करके यह निश्चय किया कि 34वाँ वेद पारायण यज्ञ आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के प्रांगण में किया जायेगा। इस यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित करने के लिए प्रसिद्ध युवा विद्वान् आचार्य पुनीत कुमार शास्त्री, मेरठ को आमंत्रित किया गया तथा यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में बम्बई से आचार्य सोमदेव जी शास्त्री के ज्येष्ठ सुपुत्र प्रखर वक्ता, युवा विद्वान् श्री प्रणव शास्त्री व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती निकिता आर्या पधारीं थीं।

इस त्रिदिवसीय महायज्ञ में अपना आशीर्वाद प्रदान करने के लिए श्रीमद्दयानन्द आर्ष वैदिक गुरुकुल परिषद् तथा वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से आमंत्रित थे। यज्ञ के पहले दिन 23 जुलाई, 2021 को गुरुकुल प्रांगण में भव्य यज्ञशाला निर्माण हेतु शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया जिसमें प्रसिद्ध दानवीर श्री दीनदयाल कोलकाता मुख्य अतिथि एवं शिलान्यासकर्ता के रूप में पधारे। उनके साथ अहमदाबाद से आर्य समाज के नेता श्री सुरेशचन्द आर्य भी शिलान्यास समारोह में आमंत्रित किये गये थे। सर्वप्रथम वेद मन्त्रों के उच्चारण के पश्चात् श्री दीनदयाल गुप्त ने अपने कर-कमलों से यज्ञशाला की नींव में शिला रखकर विधिवत शिलान्यास किया। उसके पश्चात् सर्वश्री स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री सुरेशचन्द आर्य जी, श्री सोमदेव शास्त्री जी, श्री देवेन्द्र शेखावत जी, श्री विजय शर्मा जी आदि ने अपने कर-कमलों से ताम्रपत्र नींव में रखा। इस शिलान्यास कार्यक्रम का संयोजन एवं व्यवस्था गुरुकुल पौंधा के आचार्य धनंजय जी, श्री जीववर्द्धन शास्त्री जी, श्री कुंजीलाल आर्य, श्री विक्रम आंजना, श्री कैलाश कर्मठ आदि ने कुशलता के साथ संभाला। इस कार्यक्रम में सर्वश्री भंवर लाल आर्य एवं चांदमल आर्य तथा श्री रामनिवास आर्य विशेष रूप सम्मिलित हुए।

शिलान्यास के उपरान्त श्री दीनदयाल गुप्त ने बड़ी उदारता के साथ घोषित किया कि इस

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

महर्षि दयानन्द का दिव्य सन्देश

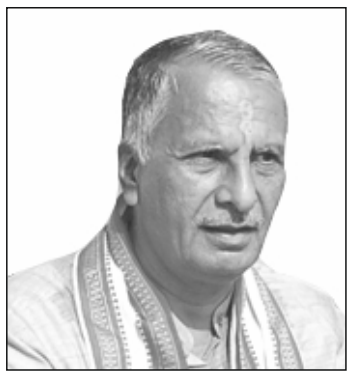

– सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई

विगत हजारों वर्षों से शैव-वैष्णव शाक्यादि सम्प्रदाय परमात्मा के नामों को लेकर परस्पर कलह कर रहे थे, एक दूसरे के प्रति घृणा, नफरत, ईर्ष्या और द्वेष फैला रहे थे। परमात्मा को विष्णु मानने वाले भक्त घोषित कर रहे थे कि जो ब्राह्मण वैष्णव नहीं है अर्थात् जो विष्णु की भक्ति नहीं करता, उसका मुंह नहीं देखना चाहिए। उससे बात नहीं करनी चाहिए। **किमत्र बहुनोषतेन ब्राह्मणा येद्र व वैष्णवाः, स्प्रष्टव्या ने यक्षतव्या न द्रष्टव्याः कदाचन! (कि. पु.)**। इसी प्रकार परमात्मा को शिव मानने वाले शैव भक्त कहते हैं कि जो शिव की पूजा नहीं करते वे राजा सहित ऐरव (भयानक) नरक में जाते हैं। शिवलिंग समुत्सृज्य यजन्ते मान्य देवता, सहदेवेन स नृपः ऐरवं नरकं प्रजेत्। (कि. पु.)। इतना ही नहीं यहाँ तक घृणा फैलाई गयी थी कि यदि पागल हाथी रास्ते में आ रहा है और लोगों को मार रहा है तो मर जाना किन्तु अपनी सुरक्षा के लिए जैन मन्दिर में मत जाना। हस्तिनाऽपिताड्यमानो न गच्छेत् जैन मन्दिरम्।

धर्म और ईश्वर के नाम पर फैली हुई घृणा और नफरत को दूर करते हुए ऋषि दयानन्द ने समझाया कि धर्म घृणा नहीं प्रेम से मिलकर रहना सिखलाता है। **मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे (यजु.)** ब्रह्मा, विष्णु, शिवादि नामों को लेकर कलह नहीं करना चाहिए, क्योंकि परमात्मा एक है उसके नाम अनेक हैं। एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति (वेद), देव दयानन्द की मानव समाज के लिए यह बहुत बड़ी देन रही है। जिस आचरण या व्यवहार से मानव मात्र की रक्षा होती है उसे धर्म कहते हैं। धर्मो धारयते प्रजाः जो सद् व्यवहार हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं वैसा व्यवहार हमें दूसरों के साथ करना चाहिए। **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।** कोई भी व्यक्ति नहीं चाहता है कि मेरे साथ कोई छल, कपट करे या मुझे कष्ट पहुँचावे या मेरे पदार्थों की कोई चोरी करे तो उसे भी दूसरों के साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए, इसे धर्म कहते हैं। ऐसा व्यवहार परस्पर सभी मनुष्य एक-दूसरे के साथ करने लगें तो सभी सुरक्षित रहेंगे, यही धर्म है जिसके लिए कहा गया है कि **'धर्मो रक्षति रक्षितः'** धर्म का कोई बाह्य चिन्ह नहीं होता, न लिंग धर्म कारणम् अर्थात् कोई यह सिद्ध नहीं कर सकता जो धोती पहनता है वह धर्मात्मा और जो नहीं पहनता वह अधार्मिक। अतः धोती पहनना, दाढ़ी, चोटी आदि धर्म के लक्षण नहीं हैं यह ऋषि दयानन्द ने समझाया है।

स्वामी दयानंद ने यह स्वीकार किया है कि भारतीय पुनरूत्थान और आधुनिकीकरण भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति के आधार पर ही संभव है। स्वामी दयानंद का भारतीय समाज पर ज्ञान अधिक गहरा था, और उनका भारतीय परम्परा का अध्ययन अधिक पूर्ण माना जा सकता है। स्वामी दयानंद में प्रखर प्रतिभा और गहरी अन्तर्दृष्टि थी, साथ ही उनमें मानवीय संवेदना की बहुत व्यापक और आन्तरिक क्षमता थी। इसलिये घर से बाहर निकलने के बाद लगभग चौबीस वर्ष उन्होंने देश के स्थान-स्थान पर सत्य की खोज में बिताये और सारे भारतीय जन-समाज का बहुत व्यापक अनुभव प्राप्त किया। अपनी सूक्ष्म संवेदना के कारण ही उनको भारतीय समाज के जीवन का यथार्थ ज्ञान हो सका। मूलशंकर घर से निकले थे संसार के बंधनों से मुक्त होकर शुद्धस्वरूप शिव की खोज में और दयानंद को मिला दुःखी, संतप्त, हीन भाव से ग्रस्त, अनेक कुरीतियों, पाखण्डों, दुराचारों से पीड़ित, कुंठित, गतिरूद्ध भारतीय समाज। और फिर वे व्यक्तिगत मोक्ष के मार्ग को भूल कर अपने समाज के उद्धार में प्राण-पण से लग गये।

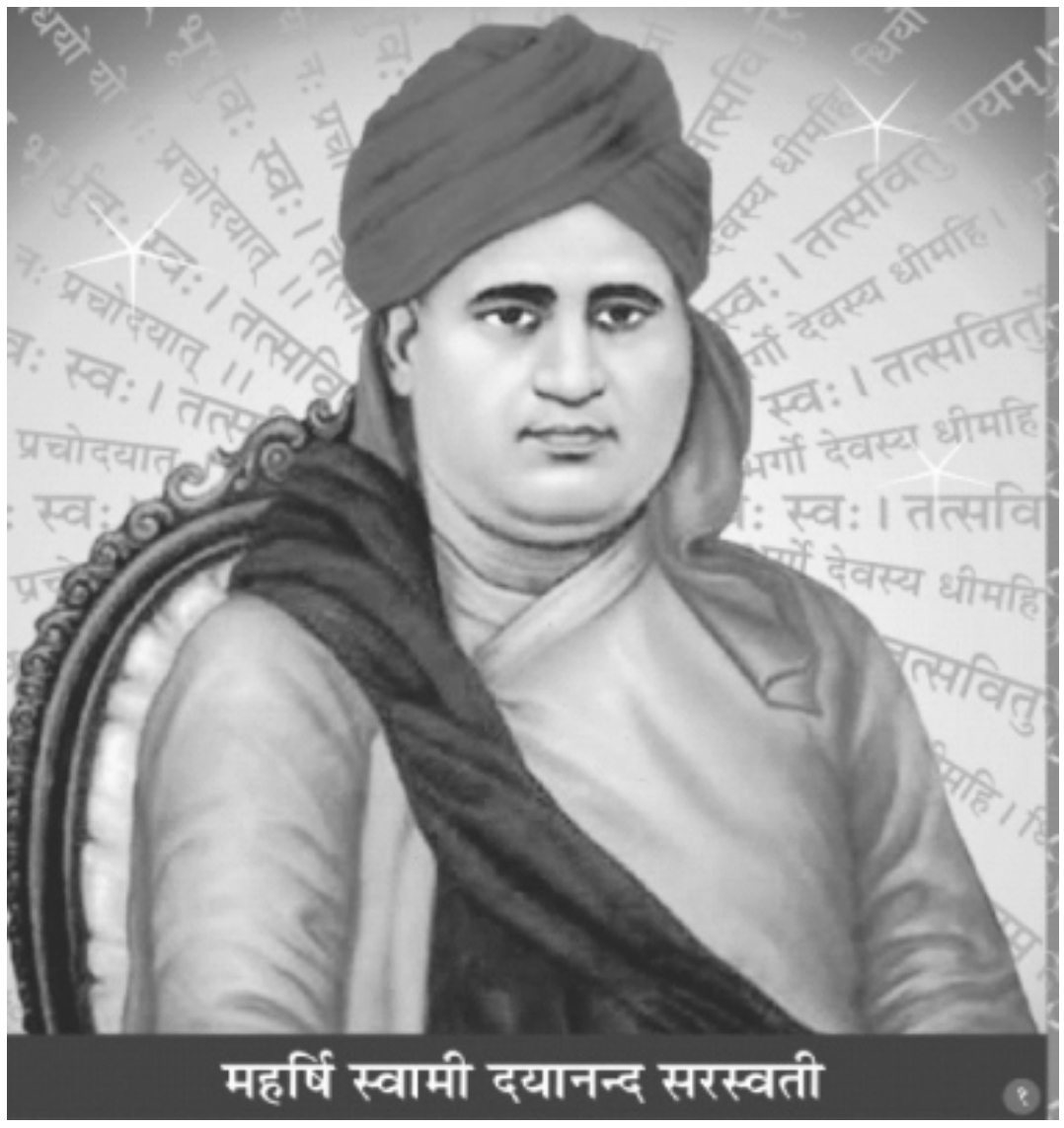

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी दयानंद ने वेदों के प्रामाण्य पर ही यह घोषित किया कि जो हमारे विवेक को स्वीकार्य नहीं, उसके त्याग में हम को एक क्षण का विलम्ब नहीं करना चाहिए। यदि वेदों में ज्ञान के बदले अज्ञान है, मानवीय उच्च मूल्यों के बजाय घोर हिंसावृत्ति, भोगवाद और यथार्थ की उपासना है तो उनको अस्वीकार कर देना चाहिए। (उन्होंने निघण्टु, निरूक्त अष्टाध्यायी और महाभाष्य जैसे व्याकरण ग्रन्थों के आश्रय से वेद- मन्त्रों की सुसंगत और व्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत की।) इस दृष्टि से गहन अध्ययन करने के बाद उन्होंने घोषित किया कि वेद, वैदिक साहित्य और अन्य आर्ष गन्थ ही प्रमाण्य हैं, उनमें सत्य-ज्ञान सुरक्षित है, इसी में भारतीय संस्कृति के उच्चतम मूल्य सुरक्षित हैं और ये मूल्य भारतीय समाज और व्यक्ति के जीवन के सभी पक्षों को मौलिक सृजनशीलता से गतिशील करने में सक्षम रहे हैं।

ईश्वर की पूजा का तात्पर्य ईश्वर के गुणों का चिन्तन करना उसके उपकारों को स्वीकार करके, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना तथा उसके गुणों को जीवन में धारण करना, उसकी पूजा है। यदि ईश्वर जीवों की रक्षा करता है, दुःखों को दूर करता है, सुख देता है तो हमें भी दूसरों की रक्षा करनी चाहिए, दूसरों को दुःख नहीं देना चाहिए, दूसरो को सुख देना, ईश्वर की पूजा है। ईश्वर की पूजा के नाम पर मनुष्य ने अपने गुण ईश्वर में डाल दिये। भूख लगने पर हम भोजन करते हैं तो भगवान को भोग लगाना उसे स्नान कराना, उसे उठाने के लिए घण्टी बजाना, सर्दी में भगवान को गरम कपड़े पहनाना आदि कार्य ईश्वर की पूजा के नाम पर हो रहे थे, आज भी हो रहे हैं। ऋषि दयानन्द ने पूजा का यथार्थ स्वरूप समझाया ईश्वर की उपासना करने वाले को अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि गुणों को धारण करना चाहिए जिससे वह परमात्मा को प्राप्त कर सके अर्थात् चोर भगवान का भक्त नहीं हो सकता और जो भगवान का भक्त होगा वह चोर नहीं हो सकता तभी तो ईश्वर के उपासक महाराजा अश्वपति ने घोषणा की थी कि मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है। **न मे स्तेनो जनपदे ..... (उप.)।**

विगत कई वर्षों से मिथ्या भ्रान्ति फैला दी गई थी कि परमात्मा पाप, क्षमा कर देता है। सैकड़ों मील दूर बैठे-बैठे व्यक्ति दो बार गंगा-गंगा शब्द बोल दे तो परमात्मा उसके सारे पाप क्षमा कर देता है और वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

गंगा गंगेति यो ब्रूज्यात् योजनानां शतैरपि।

मुंचते तर्व पापेभ्यो विष्णु लोकं स गच्छति।।

प्रातःकाल शिव के मन्दिर में जाकर शिव की मूर्ति के दर्शन कर लो तो रात्रि के किये हुए पाप नष्ट हो जायेंगे और सायंकाल दर्शन करने से दिनभर के पाप नष्ट हो जायेंगे। **प्रातःकाले शिवं दृष्ट्वा निशि पापं विनश्यति।** इसी प्रकार ईसाई, मुसलमान आदि भी मानते हैं कि ईश्वर किये हुए पापों को माफ कर देता है। क्षमावाद के भयानक प्रलोभन के कारण मनुष्य का जीवन पतित और भ्रष्ट हो गया, तब किसी ने व्यंग्य में ठीक ही कहा था कि 'जिस खुदा के ऐसे बन्दे वह खुदा कोई अच्छा खुदा नहीं।' महर्षि दयानन्द ने क्षमावाद पर करारा प्रहार करते हुए लिखा कि परमात्मा पाप क्षमा नहीं करता, मनुष्य जो भी शुभ-अशुभ कर्म करता है उसका फल उसे अवश्य भोगना पड़ता है। **अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।** कर्मफल के सिद्धान्त को व्यक्ति स्वीकार कर ले तो अनेक पाप कर्मों से बच जाता है उसका जीवन श्रेष्ठ बन जाता है।

स्वामी दयानंद के अनुसार वैदिक धर्म में परब्रह्म परमेश्वर की उपासना का विधान है परन्तु पुराणपंथियों ने उसके स्थान पर अनेकेश्वरवाद, अवतारवाद, मूर्तिपूजा, देवी-देवताओं की पूजा और यहाँ तक कि उपदेवताओं तक की पूजा प्रचलित करके अपना स्वार्थ सिद्ध किया। वेद समर्थित समाज में चार वर्णों की व्याख्या है, और यह व्यवस्था कर्म के आधार पर थी। इनमें ऊँच-नीच तथा छुआछूत का अन्तर शेष पृष्ठ 3 पर

पिछले पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द का दिव्य सन्देश

नहीं था। दयानंद जी के अनुसार व्यक्ति अपने विकास में समाज की सहायता पाता है, अतः उसे समाज को चुकाना भी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति पर स्वस्थ वंश परम्परा चलाने, ज्ञान की परम्परा को आगे बढ़ाने, प्राणिमात्र की सेवा और सहायता करने तथा जीवन को अध्यात्म की ओर अग्रसर करने का दायित्व है। इन विभिन्न दायित्वों को पूरा किए बिना कोई व्यक्ति मुक्त नहीं हो सकता।

वेद मन्त्रों को बोलकर यज्ञों में पशु हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा था। इसका विरोध करने पर पाखण्डी लोग **'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति'** कह कर यज्ञ में पशुबलि को उचित बताते थे, पशुबलि के विरोध स्वरूप जैन और बौद्ध मतों का प्रचलन प्रारम्भ हुआ, महर्षि दयानन्द ने वेद के प्रमाण 'पशून - पाहि गां मा हिंसा अध्वर और अध्वर्यु आदि देकर यज्ञ में पशु हिंसा को समाप्त करने का श्लाघनीय कार्य किया। जिन वेद मन्त्रों का मध्यकालीन वेद भाष्यकारों ने हिंसा परक अर्थ किया था जिससे धार्मिक जन वेदों से दूर हो रहे थे उनका तर्क और प्रमाणों से खण्डन करके महर्षि दयानन्द ने वेद मन्त्रों का यथार्थ अर्थ किया तथा वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। जिसके परिणाम स्वरूप विगत दो सौ वर्षों से वेदों की व्याख्या, वेदों पर प्रवचन, वेद पाठ, वेदाध्ययन और वेद सम्मेलनों का आयोजन विस्तृत रूप से हो रहे हैं, **'स्त्री शूद्रो ना धीयताम्'** कहकर स्त्री तथा वर्ग विशेष दलित आदि को वेद पढ़ने से रोका जा रहा था। ऋषि दयानन्द ने याद दिलाया कि जैसे सूर्य का प्रकाश सबको प्राप्त है वैसे ही वेद सब पढ़ और सुन सकते हैं।

महर्षि दयानन्द के लिए आर्य शब्द किसी साम्प्रदायिक धर्म का पर्याय कभी नहीं बना। यह उनके द्वारा आर्य समाज की स्थापना से भी सिद्ध है। आर्य समाज कभी किसी धर्म का रूप नहीं ले सका, यह उनकी इच्छा और विश्वास का ही परिणाम है। स्वामी दयानंद ने समाज में स्त्री के सम्मान पर विशेष ध्यान दिया था। वे पुरुष के साथ नारी की समानता का पूर्ण समर्थन करते थे। भारतीय समाज की हीन अवस्था का एक महत्वपूर्ण कारण उनके अनुसार यह भी है कि इस समाज में नारी का सम्मानपूर्ण स्थान नहीं रह गया था। वे नारी और पुरूषों के अधिकारों की पूर्ण समानता स्वीकार करते हैं, स्त्रियों में अशिक्षा, बाल-विवाह, विधवा प्रथा तथा वेश्यावृत्ति आदि अनेक समस्याओं को दयानंद ने उठाया और उनका उचित समाधान प्रस्तुत किया था। जिस साहस और दृढ़ता के साथ उन्होंने इन समस्याओं का समाधान समाज के सामने रखा था, उससे उनके व्यक्तित्व की क्रांतिकारिता परिलक्षित होती है।

स्वामी दयानंद ने भौतिक तथा आध्यात्मिक जीवन के मूल्यों के पारस्परिक अंतः सम्बन्ध को जितनी स्पष्टता के साथ प्रतिपादित और विवेचित किया है, वह विश्व के किसी अन्य महापुरुष या दार्शनिक की विचारधारा में नहीं है।

स्वामी दयानंद आधुनिक युग के महान ऋषि एवं मन्त्र द्रष्टा थे। उनमें जितनी गहरी यथार्थ की पकड़ थी, उतनी ही व्यापक इतिहास और परम्परा को ग्रहण करने की क्षमता भी थी। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने समाज की प्रक्रिया को समझा, उसके भविष्य की संभावनाओं को पहचाना और फिर उसको एक स्वस्थ, सक्रमाण और सृजनशील समाज-रचना की ओर उन्मुख करने का प्रयत्न किया।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्श जीवन के अनुकरण की प्रेरणा महर्षि दयानन्द जी ने दी। आज जगह-जगह राम का जयघोष किया जाता है, रामायण का अखण्ड पाठ होता है। भव्य राम मंदिर के निर्माण की योजना बन रही है, घर-घर में राम की पूजा होती है और यहाँ पर कोई पिता पुत्र के व्यवहार से दुःखी है, भाई-भाई का दुश्मन बना हुआ है, छोटी बातों को लेकर एक-दूसरे की हत्या कर रहे हैं तो राम जैसा आदर्श पितृ भक्त पुत्र जो पिता की आज्ञा से अपने जीवन के 14 वर्ष जंगल में व्यतीत कर देता हो, अपने भाई को इतना प्रेम करता हो कि वैद्य से कहता हो कि घाव देखना हो तो लक्ष्मण का देख लो और दर्द (पीड़ा) देखना हो तो मेरे हृदय को टटोल कर देख लो। **तं तु दशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः।** उस देश में राम की पूजा कहाँ हो रही है। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द का ही मानना है कि राम के चित्र की नहीं अपितु राम के चरित्र की पूजा करो, उनके आदर्शों का अनुकरण करो जिससे घर-घर में राम जैसे पितृ भक्त पुत्र हों, राम और भरत जैसा भाईयों में प्यार हो।

अपि स्वर्णमयी लंका न में लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्चः स्वर्गादपि गरीयसी।।

यह आदर्श देश के राजनेताओं का हो।

कृष्ण और सुदामा की मित्रता की चर्चा कृष्ण भक्तों के बीच में होती है और मित्र अपने मित्र को धोखा दे रहा हो तो कृष्ण की पूजा कहाँ हो रही है। महाभारत काल में भीष्म पितामह, युधिष्ठिर से कहते हैं इस समय धरती पर तप, त्याग, सदाचार वेदों का विद्वान् राजनीतिज्ञ, ईश्वर भक्तादि गुणों से ज्येष्ठ और श्रेष्ठ कृष्ण के अतिरिक्त कोई नहीं है। **.... न हि केशवाद् ऋते।** महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है, उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। ..... जिस कृष्ण ने रूक्मणी के साथ विवाह करके 12 वर्ष तक घोर तपस्या ब्रह्मचर्य का पालन किया और उसके पश्चात् 'प्रद्युम्न' जैसा पुत्र प्राप्त किया हो। **ब्रह्मचर्यं महद् घोरं तीर्त्या द्वादश वर्षकम्.. ...।** उस कृष्ण को जिन ग्रन्थों में चोर शिरोमणि दुराचारियों का नेता, चोर जार शिखामणि (गीता गोविन्द) कहा गया हो, जिस राधा का नाम महाभारत, हरिवंश पुराण, विष्णु पुराण व मूल भागवत में कहीं नहीं है, उस राधा को कृष्ण के साथ जोड़ दिया, रासलीलाओं में कृष्ण को भोगी विलासी व अश्लील क्रियाएं करने वाला दिखाया जाता है। जबकि इन बातों का ऋषि दयानन्द ने विरोध किया है। कर्मयोग के उपदेष्टा राजनीति के ज्ञाता, आदर्श चरित्र के धनी श्रीकृष्ण का आर्य समाज सदा जय-जयकार करता है। राधा को कृष्ण के साथ ऐसा जोड़ा गया है कि राधेश्याम, राधा कृष्णादि कहकर रूक्मणी को लुप्त कर दिया। कुछ वर्ष पहले लिव-इन-रिलेशनशिप के एक मुकदमें में सुप्रीम कोर्ट के जजों ने फैसला सुनाते हुए कहा था कि यदि राधा बिना विवाह के कृष्ण के साथ रह सकती है, तो खुशबु (दक्षिण भारत की एक्ट्रेस) भी बिना विवाह के किसी पुरुष के साथ रहती है तो इसमें गलत क्या है? इसका दुष्प्रभाव यह हुआ कि अनेक युवक-युवतियाँ बिना विवाह के साथ-साथ रहने लगे और 'लिव-इन-रिलेशनशिप' जैसी घृणित परम्परा इस देश में चल पड़ी। उत्तर प्रदेश के आई.जी. स्तर के पुलिस अधिकारी श्री पाण्डया ने औरतों के कपड़े पहने, हाथों में चूड़ियाँ पहन ली और नाचते हुए कहने लगा कि मैं कृष्ण की राधा हूँ, पुलिस विभाग ने ऐसा करने से उसे मना किया किन्तु वह नहीं माना, अन्ततोगत्वा उसे नौकरी से निकाल दिया गया। यह दुष्परिणाम है कृष्ण के अश्लील व निन्दनीय चरित्र को तथाकथित भागवत के कथाकारों द्वारा प्रस्तुत करने के कारण। यह चिन्ता है तो आर्य समाज व ऋषि दयानन्द को है। पूजा करनी है तो महाभारत के कृष्ण की करो जिसने गीता के माध्यम से निष्काम कर्म (कर्मयोग) का उपदेश दिया है और जिसका जीवन निष्कलंक एवं पवित्र है।

पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दुर्गा, भैरवादि देवी-देवताओं का जीवन कलंकित कर रखा है, किसी को भांग पीने वाला, धतुरा खाने वाला, शराब पीने वाला, किसी को मांस खाने वाला आदि बतला रखा है। शराब पीना, मांस खाना, दुराचार करने वाला देवी-देवता क्या मनुष्य भी कहलाने योग्य हैं, जो देवी-देवता हैं वह मद्य, मांस का सेवन नहीं करता है। जो सेवन करता है वह देवी-देवता नहीं हो सकता यह आर्य समाज का मानना है। आर्य समाज देवी-देवताओं का नहीं अपितु इन पर लगाये गये मिथ्या आरोपों का खण्डन करता है।

प्रत्येक गृहस्थ के लिए पंच महायज्ञ करना अनिवार्य दैनिक कर्म है। परमात्मा के उपकारों का स्मरण करके उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना, उसके गुणों - दया, परोपकार, न्यायादि को जीवन में धारण करने के लिए ब्रह्म यज्ञ करना, प्राकृतिक पर्यावरण को ठीक रखने के लिए देवयज्ञ, माता-पिता की सेवा हेतु पितृयज्ञ आने वाले विद्वानों की सेवा हेतु अतिथि यज्ञ तथा अन्य प्राणियों की रक्षा हेतु बलिवैश्व देवयज्ञ करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द विश्व के एक मात्र दार्शनिक थे जिन्होंने त्रैतवाद के वैदिक सिद्धान्त को स्थापित किया। ईश्वर, जीव, प्रकृति की अलग-अलग सत्ता को स्वीकारा तथा इन्हें नित्य व अनादि माना। ईश्वर को सब सत्य विद्याओं तथा जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल घोषित किया। स्वामी जी ने कहा कि प्रकृति सत है, जीव सत व चित है तथा ईश्वर सत, चित व आनन्द रूपी गुणों से युक्त है। महर्षि दयानन्द कर्मफल व पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते थे। सृष्टि उत्पत्ति के सम्बन्ध में वे वेद आधारित सिद्धान्त को स्वीकारते थे जिसके अनुसार प्रारम्भ में अमैथुनी तथा बाद में मैथुनी सृष्टि होती है। स्वामी जी फलित ज्योतिष के बदले गणित ज्योतिष को वेदानुकूल मानते थे। धर्म के क्षेत्र में प्रचलित परम्पराओं यथा मृतक श्राद्ध व तर्पण, जादू-टोना, तन्त्र-मन्त्र, गण्डे ताबीज, झाड़-फूंक आदि को अन्धविश्वास व पाखण्ड मानते थे तथा अवैज्ञानिक एवं वेद विरुद्ध घोषित करते थे।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वे वर्ण आश्रम व्यवस्था व व्यक्ति निर्माण के लिए सोलह संस्कारों को मान्यता देते थे। महर्षि आर्ष शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे इसके लिए उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर बल दिया। समाज में सामाजिक समरसता स्थापित करने के लिए अस्पृश्यता एवं शिक्षा तथा समानता लाना आवश्यक है। ऐसी उनकी घोषणा थी। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा है। चाहे कोई राजकुमार हो या राजकुमारी अथवा दरिद्र की सन्तान हो, सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसनादि मिलने चाहिए। यह राज नियम एवं जाति नियम होना चाहिए कि प्रत्येक बालक विद्यालय में जाये। स्वामी जी ने अनिवार्य शिक्षा, समान शिक्षा व निःशुल्क शिक्षा की क्रान्तिकारी योजना दी थी। वे वेद को मानव मात्र के विकास के लिए ज्ञान मानते थे। वेद में न तो इतिहास है, न ही भूगोल तथा न ही किसी मत, सम्प्रदाय, देश, जाति या नस्ल विशेष के लिए यह ज्ञान है। बल्कि यह वैश्विक ज्ञान है जिसको मानने से पूरे विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा मूर्तरूप ले सकती है।

स्वामी जी चले गये परन्तु भारत के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय नवजागरण में उनका योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उनकी मान्यताओं और सिद्धान्तों ने हीन भाव से ग्रस्त भारतीयों में अपूर्व उत्साह का संचार किया। अन्धविश्वास और कुरीतियों के जाल से मुक्त होकर उन्होंने जिस प्रगतिशील मार्ग को अपनाया था, जिस वैचारिक क्रांति को जन्म दिया था वही मार्ग आज हमें वैज्ञानिक युग में ले आया है।

युवा विद्वान् प्रणव शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी निकिता आर्या रहे मुख्य यजमान तथा युवा विद्वान् आचार्य पुनीत कुमार शास्त्री ने ब्रह्मा पद को किया सुशोभित

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द आर्य, आर्य वीरदल के अधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य, आर्य वीरदल राजस्थान के अध्यक्ष श्री चाँदमल आर्य, गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय शास्त्री, दयानन्द सेवाश्रम संघ के संचालक श्री जीववर्द्धन शास्त्री, आर्य भजनोपदेशक परिषद् के महामंत्री श्री कैलाश कर्मठ व आर्य समाज भीलवाड़ा के प्रधान श्री विजय शर्मा रहे विशिष्टि अतिथि

यज्ञशाला का निर्माण वह अपने डालर फाऊण्डेशन की ओर से करायेंगे। यज्ञशाला पर होने वाला सम्पूर्ण व्यय डालर फाऊण्डेशन वहन करेगा। उन्होंने आचार्य सोमदेव जी को कन्या गुरुकुल के संचालन पर होने वाले व्यय की चिन्ता से मुक्त करते हुए आश्वासन दिया कि आपको गुरुकुल के संचालन में धन की कमी नहीं आने दी जायेगी। आप निश्चिन्त होकर इस गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर ले जायें। श्री दीनदयाल गुप्त ने कन्याओं की शिक्षा पर भी महत्त्व डाला और कहा कि कन्या दो घरों को अपने ज्ञान से प्रकाशित करती है। अतः विद्यादान सबसे बड़ा दान माना गया है। मैं इस कार्य में आपका सहयोग करता रहूँगा।

श्री सुरेशचन्द आर्य ने श्री दीनदयाल गुप्त द्वारा कन्या गुरुकुल के सहयोग की घोषणा से अपने आपको सम्बद्ध करते हुए कहा कि वे गुरुकुल के विकास के लिए तन–मन–धन से सहयोग करेंगे। उन्होंने आर्य समाज के संगठन को सक्रिय करने पर भी बल दिया। स्वामी आदित्यवेश जी ने भी अपने ओजस्वी विचारों से उपस्थित जन–समूह को गुरुकुल के लिए सहयोग करने की अपील की।

अपने उद्‌बोधन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञशाला के शिलान्यास के लिए जहाँ श्री दीनदयाल गुप्ता तथा अन्य उपस्थित महानुभावों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की वहीं आचार्य सोमदेव शास्त्री जी को आर्य समाज का एक प्रेरणा पुंज बताया। उन्होंने कहा कि आचार्य सोमदेव शास्त्री जी की यह घोषणा है कि वे यज्ञों, वेद कथाओं अथवा वेद प्रचार के माध्यम से प्राप्त दक्षिणा स्वरूप राशि को अपने घर एवं व्यक्तिगत कार्यों में खर्च नहीं करेंगे, बल्कि वेद पारायण यज्ञ जो वे प्रतिवर्ष करते आ रहे हैं या विभिन्न संस्थाओं में दान देने में व्यय करेंगे। आचार्य सोमदेव जी ने वेद पारायण की रजत जयन्ती समारोह में हजारों लोगों की उपस्थिति में यह घोषणा की थी कि उन्होंने अपनी धर्मपत्नी सुदक्षिणा शास्त्री जी से बड़ी विनम्रता से यह निवेदन कर दिया था कि यज्ञों के माध्यम से प्राप्त दक्षिणा को हम घरेलू कार्यों पर व्यय नहीं करेंगे। क्योंकि विद्वान् ब्राह्मण का कार्य यज्ञ करना एवं दान देना भी होता है।

स्वामी जी ने कहा कि आचार्य सोमदेव जी एक उदाहरण के रूप में हम सभी को अपने इस त्याग से विशेष

प्रेरणा दे रहे हैं। हमलोगों को भी उनका अनुसरण करना चाहिए। यज्ञ के प्रति उनकी श्रद्धा और वैदिक सिद्धान्तों के प्रति उनकी निष्ठा निःसंदेह अनुकरणीय है। वैदिक सिद्धान्तों पर वे कभी समझौता नहीं करते। उनकी स्पष्ट मान्यता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दिखाये गये रास्ते पर जब तक आर्य समाज नहीं चलेगा, तब तक आर्य समाज अन्य लोगों का पिछलग्गू बना रहेगा। चाहे कोई हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या इसाई, बौद्ध हो या जैन, यहूदी हो या पारसी। जहाँ–जहाँ भी अवैदिक मान्यताओं का बोलबाला है। अन्धविश्वास तथा पाखण्ड, सृष्टि नियम एवं ईश्वरीय व्यवस्था के विरुद्ध आचरण है, वहीं आर्य समाज को अपने खण्डन और मण्डन के कार्य को पूरी तेजस्विता के साथ करते रहना होगा, तभी आर्य समाज का अस्तित्व सुरक्षित रह सकेगा। आर्य समाज में दोहरी मानसिकता के लोग घुसपैठ कर रहे हैं, वे आर्य समाज के विद्वानों एवं प्रचारकों को पाखण्ड, अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, तर्पण, कांवड़, व तीर्थ यात्राओं आदि का खण्डन करने से परहेज करने को कहते हैं। यदि खण्डन और मण्डन आर्य समाज के मंच से नहीं होगा तो आर्य समाज की क्या महत्ता रहेगी।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने दान, देवपूजा व संगतिकरण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने श्री दीनदयाल गुप्त की यज्ञशाला शिलान्यास एवं दान देने की घोषणा का स्वागत किया। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा कि वर्तमान समय में अंग्रेजी शिक्षा व अंग्रेजियत का बढ़ता प्रभाव चिन्ता का विषय है और इसका समाधान केवल गुरुकुल शिक्षा प्रणाली है। उन्होंने आचार्य सोमदेव शास्त्री जी व उनके परिवार को भी 34वें वेद पारायण यज्ञ के लिए आशीर्वाद एवं शुभकामना प्रदान की।

वेद पारायण यज्ञ एवं आर्ष कन्या गुरुकुल का उत्सव तीनों दिन बड़े उत्साह एवं सफलता के साथ चला। प्रातः–सायं दोनों समय सामवेद यज्ञ का पारायण किया गया जिसमें विभिन्न लोगों ने सपरिवार सम्मिलित होकर आहुतियाँ प्रदान की।

तीनों दिन कार्यक्रम में श्री कैलाश कर्मठ, श्री अमर सिंह आर्य एवं आचार्या अमृता आर्या के सुमधुर गीतों का कार्यक्रम चलता रहा और बीच–बीच में गुरुकुल के ब्रह्मचारिणियों द्वारा वेद पाठ, भाषण, कविता एवं अष्टाध्यायी के सूत्र सुनाने का भी आकर्षक कार्यक्रम चला। यह सभी छः महीने में आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने छात्राओं को सिखाया और विशेष बात यह है कि यह सभी छात्राएँ आदिवासी क्षेत्रों से आकर कन्या गुरुकुल में अध्ययन कर रही हैं। उन्हें ठीक से हिन्दी भाषा का भी अभी तक विशेष ज्ञान नहीं हो पाया है किन्तु आचार्य जी ने और कन्या गुरुकुल की आचार्याओं ने जो उड़ीसा की रहने वाली हैं विशेष पुरुषार्थ करके इन छात्राओं को तैयार किया है। इससे गुरुकुल का भविष्य उज्जव प्रतीत होता है। उनके अतिरिक्त स्वामीत्रय एवं अन्य विद्वानों के व्याख्यान भी होते रहे। 25 जुलाई, 2021 को यज्ञ की पूर्णाहुति पर यजमान परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य पुनीत कुमार शास्त्री व स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी के उपदेशामृत से उपस्थित लोगों ने आनन्द उठाया। यजमान परिवार की ओर से सभी विद्वानों व संन्यासियों को शॉल, श्रीफल और दक्षिणा द्वारा सम्मानित किया गया। इस पूरे आयोजन की व्यवस्था में आयोजन समिति के संयोजक श्री विक्रम आंजना, कोषाध्यक्ष श्री कुंजीलाल आर्य, श्री जीववर्द्धन शास्त्री, श्री अनिरूद्ध आर्य, श्री देवेन्द्र शेखावत आदि का विशेष पुरुषार्थ रहा। आचार्य सोमदेव शास्त्री जी के संयोजन में यह आयोजन भव्यता के साथ पूर्ण हुआ। अन्त में श्री देवेन्द्र शेखावत ने सभी आगन्तुक अतिथियों एवं विद्वानों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य वीरदल जोधपुर के प्रधान तथा कर्मठ कार्यकर्ता श्री हरिसिंह जी आर्य की पूज्या माता श्रीमती मोहिनी देवी जी के निधन पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी अपने साथियों के साथ परिवारजनों को सांत्वना देने हेतु उनके निवास पर जोधपुर पहुँचे

जोधपुर पहुँचने पर जोधपुर शहर की विधायक श्रीमती मनीषा पंवार जी ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी और राजस्थान सभा के प्रधान श्री बिरजानन्द जी का किया स्वागत

आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं ने आर्य समाज अमर रहे एवं महर्षि दयानन्द जी की जय के नारों से जोधपुर शहर को गुंजाया

आर्य वीरदल जोधुपर के अध्यक्ष श्री हरिसिंह आर्य जी की पूजनीया माता श्रीमती मोहिनी देवी जी (धर्मपत्नी स्व. श्री ओमदत्त आर्य) का विगत दिनों असामयिक निधन हो गया। इस दुःखद समाचार के मिलने पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके अन्य सभी साथी शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देने एवं दिवंगत पूज्या माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए श्री हरि सिंह आर्य जी के निवास पर जोधपुर पहुँचे। स्वामी जी के साथ तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व प्रधान श्री राम निवास आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् दिल्ली के प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य, आर्य वीरदल के मुख्यधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य जी, आर्य वीरदल राजस्थान के अध्यक्ष श्री चांदमल आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान श्री नारायण सिंह आर्य, श्री गजे सिंह भाटी, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य जी, श्री उमेद सिंह आर्य, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री कमलेश कुमार आर्य, बहन हिमांशी आर्या आदि भी थे।

इस अवसर पर उपस्थित पारिवारिकजनों, सम्बन्धियों तथा शुभचिन्तकों के समक्ष स्वामी जी ने जहाँ माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित की वहीं अपने सारगर्भित प्रवचन के द्वारा परिवारजनों का ढांढस बंधाया। स्वामी जी ने मृत्यु और जीवन तथा मृत्यु के बाद जीवात्मा की गति आदि विषयों को अत्यन्त सरलता के साथ अपने प्रवचन के माध्यम से प्रस्तुत किया और सभी सम्बन्धित लोगों के दुःख को हल्का किया। लगभग 45 मिनट के अपने सारगर्भित प्रवचन में स्वामी जी ने माता जी की प्रशस्ति करते हुए सभी को अश्रुपूरित कर दिया। स्वामी जी ने कहा कि पूज्या माता जी धार्मिकता, पवित्र विचारों एवं वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत थीं और उन्हीं के द्वारा प्रदान किये गये संस्कारों का आज भी उनके पूरे परिवार पर विशेष प्रभाव है। स्वामी जी ने कहा कि पूज्या माता जी जीवन पर्यन्त निरोगी रहीं और अन्त समय में भी उन्हें किसी बीमारी आदि का कोई कष्ट नहीं हुआ। ऐसी मृत्यु दिव्यात्माओं को ही मिलती है।

श्री हरि सिंह जी के परिवार में आर्य समाज के संस्कार उनके दादा जी के समय से रहे हैं। श्री हरि सिंह जी को आर्य समाज के कार्य की प्रेरणा एवं ऊर्जा उनके पूज्य पिता स्व. श्री ओमदत्त आर्य, स्व. श्री मदन सिंह आर्य, स्व. श्री राम सिंह आर्य, पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी व पूज्य स्वामी अग्निवेश जी आदि महापुरुषों से मिलती रही और उसी के परिणामस्वरूप वे जोधपुर में आर्य समाज एवं आर्य वीरदल के एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते हैं। माता जी को श्रद्धांजलि देने के लिए पधारे स्वामी आर्यवेश जी और उनके सभी साथियों का श्री हरि सिंह आर्य ने अपने परिवार की ओर से धन्यवाद किया और आभार जताया। उन्होंने कहा कि हम आशा करते हैं कि स्वामी जी का आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन हमें और हमारे परिवार को निरन्तर मिलता रहेगा।

शिवगंज एवं जोधपुर पहुँचकर कार्यकर्ताओं से मिले सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

चित्तौड़गढ़ के कार्यक्रम के पश्चात् सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट सहित अन्य सभी साथी शिवगंज पहुँचे। वहाँ पहुंचने पर कोरोनाकाल से अब तक जिन आर्य परिवारों के यहाँ जो लोग दिवंगत हुए उन सभी के यहाँ पहुँचकर परिवारजनों से मिले और उन्हें सांत्वना प्रदान की। विशेष रूप से जिला कांग्रेस अध्यक्ष और आर्य वीरदल तथा आर्य समाज के विशेष सहयोगी श्री जीवाराम आर्य की पूज्या माता श्रीमती हंजा बाई के निधन पर परिवारजनों को सांत्वना देने के लिए उनके निवास पर गये और इसी प्रकार जुझारू युवा कार्यकर्ता श्री जीवन प्रकाश आर्य जिनकी 48 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई थी, के घर परिवारजनों को ढांढस बंधाने के लिए स्वामी जी व उनके साथी परिवारजनों से मिले। इसी दौरान आर्य समाज शिवगंज व आर्य वीरदल के सक्रिय कार्यकर्ताओं की आर्य समाज के प्रांगण में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति में एक विशेष बैठक आयोजित की गई जिसमें सभी कार्यकर्ताओं का परिचय कराया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी को संन्यास दीक्षा के उपलक्ष्य में श्री बनवारी लाल आर्य ने 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया। स्वामी आदित्यवेश जी के संन्यास लेने के उपरान्त यह उनका शिवगंज में पहला दौरा था और सभी कार्यकर्ताओं में उनसे मिलने व देखने का विशेष कौतुहल तथा उत्साह उनके चेहरों से झलक रहा था। सभी कार्यकर्ताओं ने उनके साथ अपने चित्र खिंचवाकर स्मृतियाँ बटोरी। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया और उन्हें आर्य वीरदल और आर्य समाज के कार्यों को और अधिक उत्साह से करने की प्रेरणा दी। इस अवसर आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के उपमंत्री श्री हरदेव आर्य, श्री मदन आर्य, श्री जितेन्द्र सिंह पंवार, श्री सागर छिपा, श्री सागर दत्ता, श्री राहुल सुथार, श्री

शेष पृष्ठ 8 पर

यस्यच्छायाऽमृतम्

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रान्तजनमानस शंकरोऽविरतविततितापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मद्देशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सून्नतविचारवर्धकं तादृशं मङ्लमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्च्याविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृंङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्रजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथा विधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था वितो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्थाः इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्द्य, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथ मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्ति भूम्नि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमैश्वरः।

यजुंषि प्रतिपादितम्

आर्य समाज शिवगंज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं सहयोगी श्री जीवाराम आर्य जी की पूजनीया माता श्री हंजा बाई जी का निधन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने जीवाराम जी के निवास पर पहुँच कर बंधाया ढांढस

शिवगंज जिला–सिरोही, राजस्थान में आर्य वीरदल एवं आर्य समाज संगठन के कर्मठ कार्यकर्ता एवं विशेष सहयोग प्रदान करने वाले श्री जीवाराम आर्य जी की पूजनीया माता श्रीमती हंजा बाई जी का विगत दिनों 76 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर श्री जीवाराम आर्य जी के निवास पर अपनी टीम के साथ पहुँचे और माता जी के निधन से संतप्त परिवारजनों को सांत्वना प्रदान की तथा ढांढस बंधाया। स्वामी जी के साथ तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व प्रधान श्री राम निवास आर्य, आर्य वीरदल के मुख्यधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य जी, आर्य वीरदल राजस्थान के अध्यक्ष श्री चांदमल आर्य जी,

आर्य वीरदल के संचालक श्री जितेन्द्र सिंह आर्य जी, श्री उमेद सिंह आर्य, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री गजे सिंह भाटी, श्री कमलेश कुमार आर्य, श्री विनोद आचार्य, श्री हेमन्त शर्मा, श्री महेश आर्य, बहन हिमांशी आर्या आदि भी थे।

स्वामी जी ने श्री जीवाराम आर्य जी के परिवार को सांत्वना दी और कहा कि माता जी धर्मपारायणा, पवित्र विचारों एवं वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत थीं। उन्हीं के संस्कारों का आज भी पूरे परिवार पर विशेष प्रभाव है। भाई जीवाराम जी अपनी माता जी से प्राप्त संस्कारों के अनुरूप आर्य समाज एवं आर्य वीरदल संगठन शिवगंज, सिरोही (राज.) के प्रचार–प्रसार के कार्यों में विशेष योगदान प्रदान कर रहे हैं। माता जी के निधन से परिवार में जो रिक्तता उत्पन्न हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है। मैं आदरणीया माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी सद्गति और शांति की कामना परमपिता परमात्मा से करता हूँ।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

भारी छूट पर उपलब्ध

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर

लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष : 011–23274771

प्रसिद्ध युवा वैदिक विद्वान् डॉ. श्यामदेव आचार्य के भ्राता श्री श्याम सुन्दर जी की स्मृति में शांति यज्ञ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी परिवारजनों को सांत्वना

प्रसिद्ध युवा वैदिक विद्वान् डॉ. श्यामदेव आचार्य के भ्राता श्री श्याम सुन्दर जी का युवावस्था में विगत दिनों देहावसान हो गया। 18 जुलाई, 2021 को उनके रोहतक स्थित निवास स्थान पर शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी पारिवारिकजनों को सांत्वना प्रदान करने हेतु शांति यज्ञ में पहुँचे। उनके साथ स्वामी आदित्यवेश जी, श्री ऋषिराज जी, श्री सज्जन सिंह राठी जी एवं मास्टर अजीत पाल जी भी शांति यज्ञ में सम्मिलित हुए।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने मार्मिक उपदेश से परिवारजनों का दुःख बांटा और उन्हें सांत्वना प्रदान करते हुए इस दुःख से त्राण पाने की प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने कहा कि मृत्यु एक अटल सत्य है, लेकिन असमय में जो मृत्यु को प्राप्त होते हैं वे अपने पारिवारिकजनों, सम्बन्धियों और मित्रों को दारूण दुःख दे जाते हैं। श्री श्याम सुन्दर जी का निधन भी एक ऐसी ही कष्टप्रद घटना है। लेकिन परमात्मा के निर्णय के आगे हम सबको नतमस्तक होना ही पड़ता है। श्री श्यामदेव जी हमारे एक अनन्य साथी हैं और उनके भ्राता के निधन से जितना दुःख उनको है उतने ही हम सब भी दुःखी हैं। स्वामी जी ने पारिवारिकजनों को सांत्वना देते कहा कि हम आपके परिवार के सदस्य की तरह ही हैं और इस असह्य कष्ट में हम सब आपके साथ हैं। स्वामी जी ने अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति तथा सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

आर्य वीरदल एवं आर्य समाज जोधपुर के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रोशन लाल आर्य जी के युवा सुपुत्र श्री राहुल आर्य का असामयिक निधन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पारिवारिकजनों से मिलकर सांत्वना प्रदान की

आर्य वीरदल एवं आर्य समाज संगठन का जोधपुर में विशेष सहयोग करने वाले कर्मठ कार्यकर्ता श्री रोशन लाल आर्य जी के सुपुत्र श्री राहुल आर्य जी का विगत दिनों देहावसान हो गया है। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी पारिवारिकजनों को सांत्वना प्रदान करने तथा दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु प्रातःकाल श्री रोशन लाल जी के निवास पर पहुँचे। स्वामी जी के साथ तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व प्रधान श्री राम निवास आर्य, आर्य वीरदल के मुख्यधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य जी, आर्य वीरदल राजस्थान के अध्यक्ष श्री चांदमल आर्य जी, आर्य वीरदल के संचालक श्री जितेन्द्र सिंह आर्य जी, श्री उमेद सिंह आर्य, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री गजे सिंह भाटी, श्री कमलेश कुमार आर्य, श्री विनोद आचार्य, श्री हेमन्त शर्मा, श्री महेश आर्य, बहन हिमांशी आर्या आदि भी थे।

स्वामी जी ने पारिवारिकजनों से मिलकर इस दारूण दुःख को कम करने के लिए संवेदना प्रकट की तथा अपने संक्षिप्त प्रवचन में कहा कि किसी भी पिता के लिए उसके सामने उसके पुत्र का निधन हो जाना उसके लिए सबसे बड़ा असहनीय कष्ट होता है। श्री रोशन लाल आर्य जी के नवयुवक पुत्र श्री राहुल आर्य जी के अचानक निधन की घटना अकल्पनीय दुःख से परिपूर्ण है। उन्होंने जीवन मृत्यु के सम्बन्ध में विचार प्रकट करते हुए पारिवारिकजनों का ढांढस बंधाया और दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करने के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

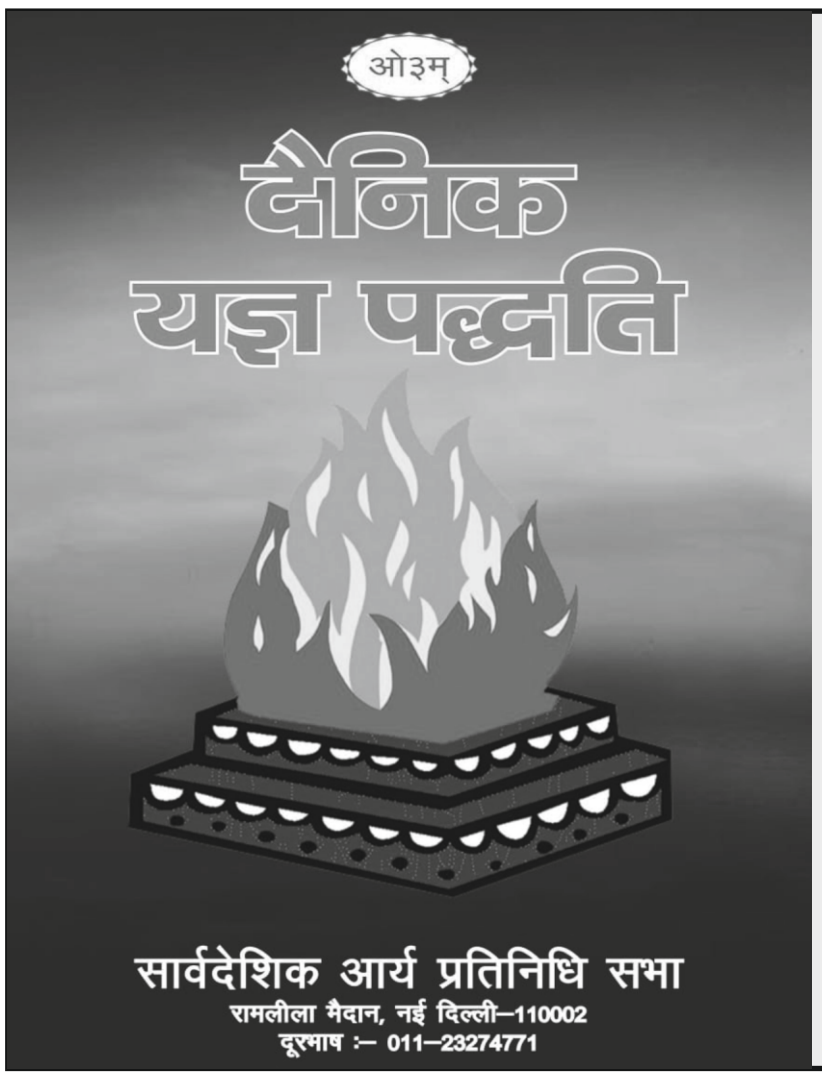

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771
मो.:–8218863689, 9013376851

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

हरियाणा आर्य युवक परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ता श्री जयपाल आर्य राजौंद, कैथल के पूज्य पिता स्व. पं. रणजीत सिंह की स्मृति में शांति यज्ञ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी हुए सम्मिलित

हरियाणा आर्य युवक परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ता श्री जयपाल आर्य, राजौंद, कैथल के पूज्य पिता स्व. पं. रणजीत सिंह जी का गत दिनों देहावसान हो गया। उनकी स्मृति में राजौंद में 19 जुलाई, 2021 को शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, ब्र. रामफल आर्य, श्री सत्यवीर आर्य–कैथल भी सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर पारिवारिकजनों को सांत्वना देते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने जीवन तथा मृत्यु के विषय में विचार प्रकट कर सबको सम्मोहित कर दिया। उन्होंने कहा कि जिस व्यक्ति का जन्म हुआ है उसका जाना निश्चित है। अतः अपने जीवन काल में ऐसे कार्य करते रहना चाहिए जिससे व्यक्ति का यश सदा अक्षुण्ण रहे। पं. रणजीत सिंह जी भी एक ऐसी ही महान आत्मा थे। उन्होंने अपने व्यवहार से अपने आपको सबका प्रिय बना लिया था। उनके सुपुत्र श्री जयपाल आर्य भी अत्यन्त कर्मठ हैं और सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के माध्यम से समाजसेवा के कार्यों में हमेशा अग्रणी रहते हैं। श्री जयपाल आर्य के पिता जी के निधन से सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के सभी कार्यकर्ता तथा हम सब को अत्यन्त कष्ट है। हम सब उनके परिवार के सदस्य की तरह ही हैं। अतः जितना दुःख और कष्ट परिवारजनों को है उतना ही कष्ट हम सबको भी है। मैं परम पिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति तथा सद्गति की प्रार्थना करता हूँ। इस अवसर पर उपस्थित अनेकों गणमान्य महानुभावों ने पं. रणजीत सिंह जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं ने आर्य समाज अमर रहे एवं महर्षि दयानन्द जी की जय के नारों से जोधपुर शहर को गुंजाया

नवरत्न आर्य, श्री गुनवंत माली, श्री सुरेश आर्य, श्री बनवारी लाल, श्री शेषराम सोलंकी, श्री दलपत आर्य, श्री दिनेश सिंह, श्री महिपाल सिंह, श्री प्रदीप गहलोत, श्री गजराज सिंह, श्री श्रवण परमार, श्री महेन्द्र गहलोत, श्री अरुण आर्य, श्री फूलराम सुथार आदि उपस्थित रहे।

शिवगंज से स्वामी आर्यवेश और उनके साथियों का काफिला जोधपुर पहुँचा और वहाँ श्री भंवर लाल आर्य के निवास पर जोधपुर शहर की विधायक श्रीमती मनीषा पंवार एवं उनके पति श्री दीपक पंवार ने स्वामी जी व उनके साथियों का स्वागत किया तथा आर्य समाज के बारे में चर्चा की। स्वामी जी के साथ तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व प्रधान श्री राम निवास आर्य एवं श्री धर्मेन्द्र आर्य भी थे। इससे पूर्व आर्य समाज, आर्य वीरदल जोधपुर, बॉक्सिंग एसोसिएशन जोधपुर, ओलंपिक एसोसिएशन जोधपुर सहित आर्य वीरदल राजस्थान के अध्यक्ष श्री चांदमल आर्य, राजस्थान के संचालक श्री भंवर लाल आर्य, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री उमेद सिंह आर्य, श्री द्वारिका प्रसाद, श्री पूनम सिंह शेखावत, श्री चेनाराम आर्य, श्री हेमन्त शर्मा, श्री भंवर लाल हटवाल, श्री विनोद आचार्य, श्री गजे सिंह भाटी, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री महेश आर्य, वीरांगना दल की संचालिका हिमांशी आर्या, श्री कुलदीप सिंह आर्य, श्री जयदीप सिंह आर्य, श्री यादवेन्द्र सिंह सहित भारी संख्या में आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं ने जोधपुर शहर के विभिन्न स्थानों पर स्वामी आर्यवेश जी तथा उनकी पूरी टीम का भव्य स्वागत किया तथा सारे नगर को 'स्वामी दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे के नारों से गुंजा दिया।

आर्य वीरदल जोधुपर व आर्य समाज पाबूपुरा द्वारा आर्य समाज परिसर में सोमवार को पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य समाज कोविड रिलीफ अभियान के राष्ट्रीय संयोजक युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य वीरदल के अधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् दिल्ली के प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व प्रधान श्री रामनिवास आर्य, आर्य वीरदल राजस्थान के प्रधान श्री चांदमल आर्य आदि उपस्थित रहे। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि पर्यावरण सुरक्षा के लिए यज्ञ के साथ–साथ वृक्षारोपण के कार्य को आर्य समाज तीव्र गति प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि देशभर में बरसात के दिनों में एक लाख पेड़ लगाये जायेंगे तथा उनकी सुरक्षा व देखभाल लगातार की जायेगी। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होगा तथा पेड़ों से ऑक्सीजन भरपूर मात्रा में मिलेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने अपने विचार रखते हुए कहा कि राजस्थान में 10 हजार पेड़ लगाये जायेंगे।

इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि यू.जी.सी. द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उपेक्षा करना निन्दनीय कार्य है। 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के प्रमुख दार्शनिकों में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम सम्मिलित न करके विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने दर्शन का नया पाठ्यक्रम अपनी बैवसाईट पर कुछ समय पूर्व अपलोड किया है। इस पाठ्यक्रम की इकाई–5(वी) में समकालीन 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों के जो नाम अपलोड किये गये हैं, उनमें स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, महात्मा गांधी, दीनदयाल उपाध्याय सहित 15 लोगों के नाम लिखे गये हैं। जिनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम नहीं है। जबकि वे समकालीन दार्शनिकों में शिखर पुरुष थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, गौ–करुणानिधि, व्यवहारभानु एवं वेद भाष्य जैसी रचनाओं के द्वारा अपने उच्च दार्शनिकता एवं पाण्डित्य का परिचय दिया हुआ है। उसके बावजूद समकालीन दार्शनिकों की सूची में उनका नाम सम्मिलित न करना हास्यास्पद लगता है। जबकि हम सभी को सर्वविदित है कि जिन दार्शनिकों के नाम इस सूची में अपलोड किये गये हैं, इनमें से अधिकंश पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का विशेष प्रभाव रहा है।

आर्य वीरदल के अधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य जी ने अपने विचार रखते हुए केन्द्र सरकार से माँग की कि यू.जी.सी. को आदेश देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम 19वीं एवं 20वीं सदी के दार्शनिकों की सूची में सम्मिलित कराये। उन्होंने आर्य युवाओं को भी इस मुद्दे पर गंभीरता से कार्य करने का आह्वान किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।